अध्याय–1

अर्थशास्त्र का परिचय
(Introduction of Economics)

परिचय

मानव–सभ्यता के आरम्भ से ही मानव की भिन्न–भिन्न प्रकार की आजीविकाओं पर निर्भरता रहती आई है। आदिमानव का जीवनयापन आखेटन पर आधारित था। पशुपालन व कृषि आजीविकाओं का रूप लेकर आज अधिकांश लोगों की रोजी–रोटी का साधन हैं। कालान्तर में औद्योगिक–क्रान्ति के बाद संसार के कई देशों में आजीविकाओं का रूप बदला। आज उद्योग, व्यापार एवं अन्य वाणिज्यिक क्रियाएँ विकसित हो गयी हैं। वाणिज्यिक क्रियाएँ अधिकतर लोगों के रोजगार व आय का साधन बन गयीं हैं। इस प्रकार आर्थिक–क्रियाओं के स्वरूप में विकास एवं परिवर्तन हुआ। इसी तरह आर्थिक–क्रियाओं से सम्बन्धित आर्थिक–विचारों, सिद्धान्तों व नियमों का साहित्य समृद्ध होकर अर्थशास्त्र के नाम से लोकप्रिय हुआ।

'अर्थशास्त्र' नाम का उल्लेख भारत के प्राचीन ग्रन्थों में मिलता है। ''कृषिपालन,पालयः वाणिज्यम च वार्ता:'' में 'वार्ता:'शब्द का प्रयोग आर्थिक–क्रियाओं के लिए हुआ है। बृहस्पति, शुक्र व कौटिल्य इत्यादि द्वारा कृषि, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन एवं वाणिज्य से सम्बन्धित आर्थिक–क्रियाओं के लिए 'वार्ता:'शब्द का प्रयोग किया गया। 'अर्थशास्त्र' से सम्बन्धित भारत के विचारकों में–स्वामी दयानन्द सरस्वती, दादा भाई नौरोजी, महादेव गोविन्द रानाडे, गोपाल कृष्ण गोखले, रमेश चन्द्र दत्त, एम. एन. रॉय प्रमुख हैं। बाद के भारत के विचारकों में महात्मा गाँधी, जवाहर लाल नेहरू, राम मनोहर लोहिया, प्रो. जे. के. मेहता, पण्डित दीन दयाल उपाध्याय एवं अमर्त्य सेन प्रमुख हैं।

अर्थशास्त्र की परिभाषाएँ

विश्व में 'अर्थशास्त्र' का जनक एडम स्मिथ को माना जाता है। एडम स्मिथ की पुस्तक (An Enquiry into the Nature and Causes of the Wealth of Nations) सन् 1776 में प्रकाशित हुई। अर्थशास्त्रियों द्वारा अर्थशास्त्र की अलग–अलग परिभाषाएँ दी गई हैं। अलग–अलग परिभाषाओं में प्रमुखतः– 1. धन–प्रधान 2. कल्याण–प्रधान 3. सीमितता–प्रधान 4. विकास–प्रधान व 5. आवश्यकता–विहीनता की स्थिति पर आधारित हैं।

एडम स्मिथ ने 'अर्थशास्त्र' को 'धन' (Wealth) का अध्ययन बताया। अर्थशास्त्री अल्फ्रेड मार्शल ने 'अर्थशास्त्र' को 'आर्थिक–कल्याण' (Economic-Welfare) का अध्ययन के रुप में परिभाषित किया। उपर्युक्त विचारों की कटु आलोचना करते हुए लॉर्ड लियोनिल रोबिन्स ने 'अर्थशास्त्र' को असीमित–आवश्यकताओं (Unlimited-Ends) व सीमित–साधनों (Limited-Resources) से सम्बन्धित बताया। लॉर्ड लियोनिल रोबिन्स के अनुसार 'असीमित – आवश्यकताओं की सीमित–साधनों (Unlimited-Ends with Limited-Resources) द्वारा पूर्ति हेतु चयन–प्रक्रिया (Choice Making Process) से सम्बन्धित अध्ययन' परिभाषित किया। 'अर्थशास्त्र' को 'विकास' से सम्बन्धित करते हुए पॉल ए. सेम्युलसन ने आर्थिक–क्रियाओं के गत्यात्मक–विश्लेषण पक्ष पर जोर दिया है। प्रो. जे. के. मेहता ने 'अर्थशास्त्र' को एक व्यक्ति में 'आवश्यकताओं की विहीनता की स्थिति' प्राप्त करने में मदद करने वाला अध्ययन बताया। प्रो.मेहता के विचार महात्मा गाँधी के विचारों से प्रभावित रहें हैं।

एना कुत्सोयानिस (A. Koutsoyannis) के अनुसार ''आर्थिक सिद्धान्त का उद्देश्य एक व्यक्तिगत इकाई (एक उपभोक्ता, एक उत्पादक व एक फर्म या सरकारी–एजेन्सी) के आर्थिक – व्यवहार तथा उसका एक दूसरे पर प्रभाव का वर्णन करने वाले मॉडल बनाना है, जिससे एक क्षेत्र, देश या सम्पूर्ण विश्व की अर्थव्यवस्था बनती है।''

'अर्थशास्त्र' सामाजिक विज्ञान से सम्बन्धित होता है। 'अर्थशास्त्र' में समाज व परिवार के सदस्य के रूप में एक व्यक्तिगत इकाई (एक उपभोक्ता, एक उत्पादक व एक फर्म) अथवा उनके समूहों एवम् देशों के आर्थिक–व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। ये सभी अपनी असीमित व प्रतिस्पर्धी आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए सीमित व वैकल्पिक उपयोग वाले साधनों का चुनाव करते हैं।

सरल शब्दों में, 'अर्थशास्त्र' व्यक्तियों या देशों के द्वारा साधनों की सीमितता के कारण उत्पन्न चुनाव से सम्बन्धित समस्याओं के अध्ययन का विज्ञान व उनके समाधान की कला है। इस प्रकार अर्थशास्त्र–1. सामाजिक विज्ञान की एक शाखा है। 2. अर्थशास्त्र में व्यक्ति या देशों की अर्थव्यवस्था के व्यवहार के आर्थिक–पक्ष का अध्ययन किया जाता है। 3. अर्थशास्त्र असीमित

व प्रतिस्पर्धी आवश्यकताओं का सीमित व वैकल्पिक उपयोग वाले साधनों के चुनाव द्वारा हल निकालने से सम्बन्धित है।

अर्थशास्त्र की प्रकृति व क्षेत्र

अर्थशास्त्र की प्रकृति व क्षेत्र के बारे में अर्थशास्त्रियों के विचारों में बहुत कम समानता पायी जाती है। जॉन नेविल्ले कीन्स (John Neville Keynes) ने अर्थशास्त्र की प्रकृति व क्षेत्र का विस्तारपूर्वक उल्लेख किया है। जॉन नेविल्ले कीन्स ने अर्थशास्त्र की विषय–वस्तु में अर्थशास्त्र की प्रकृति, अन्य विषयों से सम्बन्ध व आर्थिक–नियमों की कमियों का समावेश किया है। आजकल अर्थशास्त्र की विषय–वस्तु के अन्तर्गत व्यक्तिगत इकाई (एक उपभोक्ता, एक उत्पादक व एक फर्म) का अध्ययन 'व्यष्टि–अर्थशास्त्र' के अन्तर्गत करते हैं। इसी प्रकार व्यक्तिगत इकाइयों के समूहों (एक देश के) के आर्थिक–व्यवहार के स्तर का अध्ययन 'समष्टि–अर्थशास्त्र' में किया जाता है:–

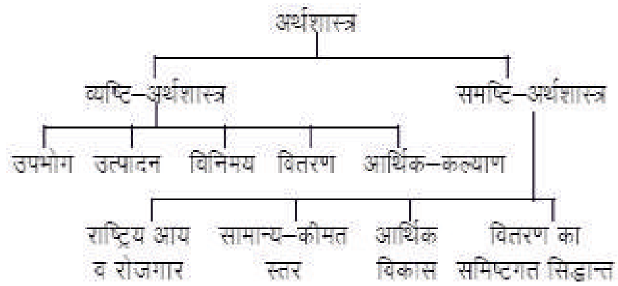

सर्वप्रथम सन् 1933 में रेग्नर फ्रिश (Ragner Frisch) ने व्यष्टि–अर्थशास्त्र (Micro-Economics) तथा समष्टि–अर्थशास्त्र (Macro-Economics) का प्रयोग किया। Micro तथा Macro अंग्रेजी भाषा के शब्द हैं जिनकी उत्पत्ति ग्रीक भाषा के शब्द Mikros तथा **Makros** से हुई। Micro तथा Macro का अर्थ क्रमशः 'सूक्ष्म' व 'व्यापक' है। व्यष्टि–अर्थशास्त्र एवम् समष्टि–अर्थशास्त्र के बारे में एन. ग्रेगॉरी मेन्कीव की निम्न परिभाषा महत्वपूर्ण है– *''व्यष्टि–अर्थशास्त्र वह अध्ययन है कि कैसे परिवार व व्यावसायिक–फर्में निर्णय लेते हैं तथा वे विशेष बाजारों में आपस में अन्तःक्रिया करते हैं। समष्टि–अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में फैली हुई घटनाओं का अध्ययन है।''*

व्यष्टि–अर्थशास्त्र

व्यष्टि–अर्थशास्त्र (Micro-Economics) को कीमत – सिद्धान्त **(Price-Theory)** भी कहते हैं। व्यष्टि–अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत इकाई (एक उपभोक्ता, एक उत्पादक व एक फर्म) का अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन कीमत को ध्यान में रख कर किया जाता है। जैसे एक उपभोक्ता द्वारा एक निश्चित कीमत व आमदनी की स्थिति में उसकी संतुष्टि को अधिकतम करना। इसी प्रकार एक उत्पादक द्वारा एक वस्तु या सेवा की निश्चित कीमत की स्थिति में उसके उत्पादन को अधिकतम करना। इसी प्रकार एक फर्म द्वारा अथवा 'समान फर्मों' के समूह– 'उद्योग' में निश्चित कीमत पर लाभ व उत्पादन को अधिकतम करना इत्यादि। इन सभी व्यक्तिगत इकाइयों का अध्ययन कीमत को ध्यान में रख कर किया जाता है। वितरण के सिद्धान्त के अन्तर्गत भी साधनों की कीमत को ध्यान में रख कर अध्ययन किया जाता है। जैसे श्रम की कीमत– मजदूरी, पूँजी के उपयोग की कीमत– ब्याज, भूमि के उपयोग की कीमत– लगान, उद्यमशीलता के उपयोग की कीमत– लाभ इत्यादि। साधनों की कीमत को साधनों के प्रतिफलों के रूप में रख कर अध्ययन किया जाता है।

व्यष्टि–अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत इकाई का आंशिक (Micro-Partial) व कुल व्यष्टिगत (Micro-Total) अर्थशास्त्रीय अध्ययन होता है। वस्तु की कीमत को परिवर्तनशील तथा अन्य कारकों जैसे उपभोक्ता की आय इत्यादि को स्थिर मानकर किया जाने वाला अध्ययन आंशिक अध्ययन कहा जाता है। किन्तु जब सभी कारक परिवर्तनशील होते हैं तो उसको कुल व्यष्टिगत **(Micro-Total)** अध्ययन किया जाता है।

व्यष्टिगत–अर्थशास्त्रीय अध्ययन जब कीमत इत्यादि आर्थिक चरों को स्थिर मानकर होता है तो उसे व्यष्टिगत–स्थैतिक (Micro-Static) अध्ययन कहते हैं। इसी प्रकार जब दो स्थिर अवस्थाओं की तुलना करते हैं उसे व्यष्टिगत–तुलनात्मक **(Micro-Comparative)** अध्ययन कहते हैं। आर्थिक चरों को निरन्तर गतिशील अवस्था में मानकर किया गया अध्ययन व्यष्टिगत – प्रावैगिक **(Micro-Dynamic)** अध्ययन कहलाता है।

समष्टि–अर्थशास्त्र

समष्टि–अर्थशास्त्र (Macro-Economics) में अध्ययन व्यापक अथवा समग्र स्तरों के सन्दर्भ में किया जाता है। समष्टि–अर्थशास्त्र के अन्तर्गत राष्ट्रीय–आय के स्तर, रोजगार के स्तर, देश में बचत का स्तर, देश में विनियोग का स्तर, सामान्य कीमत–का स्तर, आर्थिक–वृद्धि व विकास में उतार व चढ़ाव इत्यादि का अध्ययन किया जाता है। व्यापक अथवा समग्र स्तरों के सन्दर्भ में किया जाता है। समष्टि–अर्थशास्त्र को सामान्य–आय व रोजगार का सिद्धान्त (General-Income and Employment Theory) भी कहा जाता है। समष्टि–अर्थशास्त्र से सम्बन्धित जॉन मिनार्ड कीन्स (John Mynard Keynes) की सन 1936 में 'दी जनरल थ्योरी' (The General Theory of Employment, Interest and Money) पुस्तक प्रकाशित हुयी। इसके बाद समष्टि–अर्थशास्त्र के सिद्धान्त अधिक वैज्ञानिक तरीके से विकसित होने लगे।

गार्डनर एक्ले (Gardner Ackley) के शब्दों में ''समष्टि–अर्थशास्त्र आर्थिक विषयों पर 'व्यापक रूप' से विचार

करता है। समष्टि–अर्थशास्त्र का सम्बन्ध आर्थिक जीवन के पूरे विस्तार की सभी विमाओं (दिशाओं) से होता है। यह (समष्टि–अर्थशास्त्र) व्यक्तिगत अंगों के कार्य की विमाओं (दिशाओं) के बजाय, आर्थिक अनुभव के हाथी के सम्पूर्ण आकार, आकृति व कार्य करने का अवलोकन करता है। इस रूपक को बदलने पर, यह उस पूरे वन की विशेषताओं का अध्ययन, उसे बनाने वाले पेड़ों से स्वतन्त्र होकर, करता है।''

समष्टि–अर्थशास्त्र में भी एक कारक के आधार पर समष्टिगत–आंशिक (Macro-Partial) अध्ययन किया जाता है। किन्तु, सभी कारकों को परिवर्तनशील मानते हुए समष्टिगत– कुल (Macro-Total) अध्ययन होता है। समष्टिगत–कुल (Macro-Total) के अन्तर्गत राष्ट्रीय–आय के स्तर, रोजगार के स्तर, बचत का स्तर, विनियोग का स्तर, सामान्य कीमत–का स्तर, आर्थिक–वृद्धि व विकास में उतार व चढ़ाव इत्यादि का अध्ययन होता है। समष्टिगत–अर्थशास्त्रीय अध्ययन भी स्थिर अवस्था में समष्टिगत–स्थैतिक (Macro-Static) कहलाता है। किन्तु जब दो स्थिर अवस्थाओं की तुलना करते हैं इसे समष्टिगत– तुलनात्मक (Macro-Comparative) अध्ययन कहते हैं। इसी प्रकार निरन्तर गतिशील अवस्था में किया जाने वाला अध्ययन समष्टिगत–प्रावैगिक (Macro-Dynamic) कहलाता है।

व्यष्टि एवम् समष्टि–अर्थशास्त्र में अन्तर– व्यष्टि अर्थशास्त्र व समष्टि अर्थशास्त्र में अनेक आधारों पर अन्तर किया जा सकता है। व्यष्टि अर्थशास्त्र द्वारा व्यक्तिगत आर्थिक अनुभव के आधार पर अध्ययन किया जाता हैं। समष्टि अर्थशास्त्र में व्यापक या समग्र स्तरों के आधार पर अध्ययन की विषय–वस्तु व विधियाँ अपनायीं जाती हैं। इसी तरह व्यष्टि अर्थशास्त्र व समष्टि अर्थशास्त्र के अध्ययन के मध्य कतिपय आधारों का भी अन्तर देखा जाता है। व्यष्टिगत व समष्टिगत अर्थशास्त्र के मध्य विभिन्न प्रकार के अन्तर तालिका 1.1 में दिये गये हैं:–

छोटी–छोटी असंख्य व्यक्तिगत इकाइयों की सहायता से बड़े समूह बनते हैं। असंख्य व्यक्तिगत इकाइयों के उपभोग, उत्पादन, श्रमिकों व अन्य साधनों को जोड़ कर समष्टिगत उपभोग, उत्पादन व कुल संसाधनों के स्तर ज्ञात होते हैं। इस प्रकार व्यष्टि एवम् समष्टि–अर्थशास्त्र एक दूसरे के पूरक हैं।

आर्थिक–विश्लेषण की विधियाँ– आर्थिक–विश्लेषण करने की भिन्न–भिन्न विधियाँ होती हैं जो भिन्न–भिन्न आधार, उद्देश्यों व अन्य आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर काम में ली जाती हैं जिनका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है–

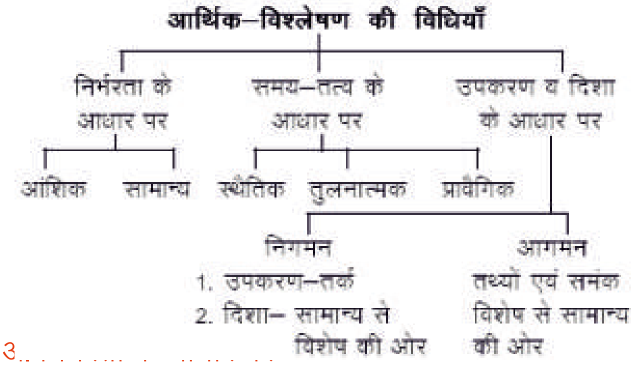

3

तालिका 1.1

क्र.सं.	अन्तर का आधार	व्यष्टि–अर्थशास्त्र	समष्टि–अर्थशास्त्र
1.	अध्ययन की इकाई	एक व्यक्तिगत इकाई	एक देश की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था
2.	मान्यता	पूर्ण प्रतियोगिता व रोजगार, सरकार का दखल नहीं, स्वतंत्र कीमत–तंत्र	उत्पादन के साधनों का वर्तमान वितरण पहले से ही निर्धारित है
3.	अध्ययन का उद्देश्य	संसाधनों के अधिकतम वितरण से सम्बन्धित सिद्धांतों के लिए	उत्पादकता का विस्तार व पूर्ण रोजगार की प्राप्ति से सम्बन्धित सिद्धांतों हेतु
4.	विश्लेषण के उपकरण	कीमत के उपकरण	राष्ट्रीय आय का स्तर के उपकरण
5.	अध्ययन की स्थिति	व्यक्तिगत इकाइयों का जब वे संतुलन की स्थिति में जो तब अध्ययन	जब सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था असंतुलन की स्थिति में हो तब अध्ययन
6.	संतुलन का प्रकार	आंशिक संतुलन	सामान्य संतुलन
7.	परिवर्तन	व्यष्टि के परिवर्तन समष्टि की स्थिरता में भी हो सकते है	समष्टि की स्थिरता पर व्यष्टि की बनावट में परिवर्तन का प्रभाव नहीं पड़ता
8.	विरोधाभास	व्यष्टि के लिए बचत लाभकारी	समष्टि के लिए बचत अलाभकारी

जब आर्थिक–विश्लेषण किसी एक कारक को ध्यान में रख कर किया जाता है तब वह 'आंशिक–विश्लेषण' कहलाता है। जैसे वस्तु की मांग का अध्ययन उसी वस्तु की कीमत, को ध्यान में रखते हुये करना आंशिक–विश्लेषण कहलाता है। किन्तु, जब वस्तु की मांग का अध्ययन उस वस्तु की कीमत के साथ–साथ अन्य कारकों के आधार पर किया जाने वाला अध्ययन 'सामान्य–अध्ययन' कहा जाता है। जैसे वस्तु की प्रतिस्थापक वस्तु की कीमत, उपभोक्ता की आमदनी इत्यादि के आधार पर किये जाने वाले अध्ययन को सामान्य–अध्ययन कहते हैं।

ब. समय–तत्व के आधार पर –

आर्थिक–विश्लेषण समय के एक विशेष बिन्दु के सम्बन्ध में होने पर स्थैतिक–विश्लेषण कहलाता है। आर्थिक–विश्लेषण समय के दो बिन्दुओं से सम्बन्धित स्थितियों की तुलना करने पर उसे तुलनात्मक–विश्लेषण कहते हैं। जब साम्यों के मध्य होने वाले परिवर्तन की श्रृंखला का आर्थिक अध्ययन किया जाता है तो उस आर्थिक–विश्लेषण को प्रावैगिक–विश्लेषण कहते हैं। सर्वप्रथम रेग्नर फ्रिश ने सन् 1928 में आर्थिक– स्थैतिक व आर्थिक–प्रावैगिकी शब्दों का प्रयोग किया।

स. उपकरण व दिशा के आधार पर –

यद्यपि आगमन व निगमन विधियाँ एक दूसरे की पूरक हैं फिर भी इनमें कुछ अन्तर होते हैं। निगमन विधि के अन्तर्गत किसी एक विशेष व्यक्तिगत इकाई के आर्थिक–विश्लेषण तर्क–विधि के आधार पर करते हैं। इस विधि में हम सामान्य सत्य के आधार पर किसी विशिष्ट सत्य का पता लगाते है। जब तर्क–विधि के आधार पर ही सामान्यीकरण किया जाता है तो उस विधि को निगमन विधि कहते हैं। निगमन विधि को काल्पनिक, निराकार तथा तर्क विधि भी कहते हैं। निगमन विधि में सामान्य से विशेष तथा परिकल्पना से तथ्यों की ओर अध्ययन किया जाता है।

आगमन–विधि के अन्तर्गत आर्थिक–विश्लेषण के सामान्य नियमों को किसी एक विशेष व्यक्तिगत इकाई के आर्थिक व्यवहार में खोजते हैं। आगमन–विधि में आंकड़ों/समंकों व सांख्यिकी की विधि के द्वारा अध्ययन किया जाता है। इसमें वास्तविक जगत की घटनाओं से सम्बन्धित तथ्यों के संकलन, वर्गीकरण व विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष निकाले जाते है। माल्थस ने अपने जनसंख्या सिद्धांत में इसी विधि का प्रयोग किया था। आगमन– विधि को अनुभव पर आधारित विधि अथवा ऐतिहासिक विधि भी कहते हैं।

अर्थशास्त्र कला है या विज्ञान

अर्थशास्त्र की प्रकृति का अभिप्राय है अर्थशास्त्र किस प्रकार का अध्ययन है। आर्थिक अध्ययन दो प्रकार की प्रकृति के होते हैं– 1. अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में तथा 2. अर्थशास्त्र कला के रूप में। वैज्ञानिक तरीके से होने वाले अध्ययन क्रमबद्ध, तथ्यपरक व तार्किक होते हैं। अर्थशास्त्र के सिद्धान्त व नियमों को विज्ञान के रूप में ज्ञात कर सकते हैं। इस प्रकार अर्थशास्त्र के सिद्धान्त व नियमों को समाज में लोगो के व्यवहार के अन्तर्गत देखकर अवलोकनों (Observstions) के रूप में ज्ञात कर सकते हैं। अर्थशास्त्र में भी विभिन्न प्रकार के सिद्धान्त, नियम होते हैं। जैसे– मांग का नियम, पूर्ति का नियम, उत्पत्ति के नियम, लगान, ब्याज, मजदूरी के सिद्धान्त इत्यादि पाये जाते हैं।

अर्थशास्त्र की अध्ययन–पद्धति तथ्यपरक व तर्क–आश्रित दोनों ही प्रकार की हो सकती हैं। निगमन विधि के अन्तर्गत आर्थिक अध्ययन तर्क के आधार पर किया जाता है। तथ्यपरक आर्थिक अध्ययन के लिए तथ्यों (आंकड़ों अथवा समंकों) के आधार पर विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष निकालते हैं। इस प्रकार से अर्थशास्त्र की प्रकृति को विज्ञान के रूप में माना जाता है। सामान्यतः अर्थशास्त्र की प्रकृति का विज्ञान के दो रूपों में उल्लेख होता है–यथार्थमूलक तथा आदर्शमूलक। यथार्थमूलक अध्ययन–पद्धति में 'कारण व परिणाम'(Cause and Effects) के आधार पर विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष निकालते हैं। अर्थशास्त्र के विभिन्न प्रकार के नियमों को 'क्या है' (What is) के द्वारा बताया जाता है। जैसे वस्तु की कीमत में कमी से वस्तु की मांग में वृद्धि होती है। इसी प्रकार आदर्शमूलक अध्ययन–पद्धति में 'मूल्यों' (Value-Based) के आधार पर अध्ययन किया जाता है। आदर्शमूलक अध्ययन–पद्धति में 'क्या होना चाहिए' के आधार पर विश्लेषण करते हुए निष्कर्ष निकालते हैं। अर्थशास्त्र के विभिन्न अच्छे–बुरे अथवा सही–गलत के निर्णय आदर्शमूलक अध्ययन–पद्धति के अन्तर्गत होते हैं। जैसे अमीरों पर अधिक व गरीबों पर कम आयकर (Income-Tax) लगाने चाहिए।

कला का अर्थ शारीरिक अथवा मानसिक क्षमता से होता है। वह शारीरिक अथवा मानसिक क्षमता जिसके द्वारा एक कार्य सर्वोत्तम या श्रेष्ठ तरीके से किया जा सके। इस प्रकार कला एक विधि है। आदर्शमूलक अर्थशास्त्र की प्राप्ति यथार्थमूलक अर्थशास्त्र के आधार पर करते हैं। अर्थव्यवस्था में 'क्या होना चाहिए' (What Should Be) की प्राप्ति 'क्या है' (What is) या 'क्या होता है' के आधार पर करते हैं। एक विशेष कार्य जैसे–गरीबी दूर करना, की सर्वोत्तम या श्रेष्ठतम तरीके से प्राप्ति कला है। अर्थात् अर्थशास्त्र के नियमों व विधियों का उपयोग करते हुये गरीबी को कम करना अर्थशास्त्र के कला होने को स्पष्ट करता है। दैनिक जीवन की चुनाव–सम्बन्धी समस्याओं के सर्वोत्तम–हल, अर्थशास्त्र के नियमों व विधियों का उपयोग करते हुये करते हैं। अर्थशास्त्र के नियमों व विधियों द्वारा सन्तुष्टि अधिकतम करना, उत्पादन अधिकतम करना, लाभ अधिकतम करना, बेरोजगारी घटाना, आर्थिक वृद्धि व विकास करना अर्थशास्त्र के कला होने के उदाहरण हैं।

आर्थिक–नियमों की कमियाँ

प्राकृतिक–विज्ञान के विषयों जैसे–भौतिकशास्त्र या रसायनशास्त्र के नियमों व सिद्धान्तों में पूर्ण शुद्धता होती है। प्राकृतिक–विज्ञान के विषयों को प्रयोगशाला में देखकर उन नियमों व सिद्धान्तों की वास्तविकता परख सकते हैं। अर्थशास्त्र एक प्रकार का सामाजिक–विज्ञान होने के कारण इसके नियमों व सिद्धान्तों को किसी प्रयोगशाला में नहीं देख सकते हैं। अर्थशास्त्र व सामाजिक–विज्ञान के लिए तो समाज ही प्रयोगशाला होती है। इस प्रकार अर्थशास्त्र के नियम व सिद्धान्त भौतिकशास्त्र या रसायनशास्त्र के नियमों व सिद्धान्तों की तरह उतने खरे नहीं होते हैं। अर्थशास्त्र के नियम व सिद्धान्तों में पूर्ण शुद्धता नहीं होने के कारण कम विश्वसनीयता देखने को मिलती है। फिर भी 'इतिहास' का विकास अभी 'वर्णनात्मक चरण' में है। राजनीतिशास्त्र, लोकप्रशासन व सामाजिक मानवशास्त्र एक कदम आगे 'विश्लेषण चरण' में हैं। इन सभी से बहुत आगे अर्थशास्त्र में, 'भविष्यवाणी कर सकने के चरण' तक अर्थशास्त्र के नियमों व सिद्धान्तों का विकास हो चुका है। इसी कारण आज अर्थशास्त्र महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। अर्थशास्त्र के नियमों व सिद्धान्तों का सही ज्ञान कुछ मान्यताओं पर निर्भर करता है।

मान्यतायें– मान्यतायें कुछ मूलभूत व आवश्यक बातें, दशायें या शर्तें होती हैं। इन मूलभूत व आवश्यक बातों, दशाओं या शर्तों का पूरा होना किसी नियम व सिद्धान्त के लिए आवश्यक होता है। हम जानते हैं कि प्रत्येक सिद्धांत के पीछे कुछ ऐसी प्रस्थापनाएं और परिस्थितियां होती है जिन्हें दिया हुआ मान लिया जाता है। इन्हें ही उस सिद्धांत के आधार तत्व अथवा मान्यताएं कहते है। वास्तव में नियम व सिद्धान्त के खरा उतरने या पूर्णतः सत्य सिद्ध होने के लिए उपर्युक्त बातों, दशाओं या शर्तों का पूरा होना आवश्यक होता है।

अर्थशास्त्र की मान्यतायें– आर्थिक–विश्लेषण करते समय कईं प्रकार की बातों, दशाओं या शर्तों की मान्यतायें लेते हैं। विभिन्न आर्थिक–नियमों व सिद्धान्तों के खरा उतरने या पूर्णतः सत्य सिद्ध होने के लिए कुछ विशेष बातों, दशाओं या शर्तों की मान्यताओं का पूरा किया जाना आवश्यक होता है। आर्थिक–विश्लेषण के लिए निम्नलिखित मुख्य मान्यतायें ली जाती हैं–

1. अन्य बातें समान रहें
2. आर्थिक इकाई की विवेकशीलता
3. आर्थिक मानव
4. साम्य या संतुलन की आरंभिक दशा
5. विशेष सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक संस्थाओं से सम्बन्ध
6. जीवविज्ञान व भूगोल से सम्बन्ध

अर्थशास्त्र में आर्थिक–व्यवहार, आर्थिक–समस्याओं तथा विश्लेषण के परिचय के लिए मान्यतायों के साथ–साथ कुछ शब्दावली, जैसे– चर (चल राशियाँ) (Variables), स्थिरांक, (Constants), प्राचल (Parameters), परिकल्पना (Hypothesis), अभिस्वीकृतियाँ (Axioms), नियम (Laws) व भविष्यवाणी (Prediction) इत्यादि का ज्ञान व समझ होना भी आवश्यक होता है।

मनुष्य की आवश्यकताएं असीमित होती हैं। यदि सभी आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए साधन भी असीमित होते है तो कोई आर्थिक समस्या उत्पन्न नहीं होती। प्रत्येक अर्थव्यवस्था में आवश्यकताओं की तुलना में साधन सीमित होते है। साधनों की सीमितता से उत्पन्न आर्थिक समस्या के प्रमुख कारण निम्न हैं :–

1. भिन्न भिन्न प्राथमिकताओं वाली असीमित आवश्यकताएं
2. सीमित किन्तु वैकल्पिक उपयोगों वाले साधन
3. आवश्यकताओं व साधनों के बीच समन्वय (तालमेल)

आवश्यकताओं व साधनों के बीच असमानता के कारण आर्थिक समस्या उत्पन्न होती है। विभिन्न प्रतिस्पर्धी आवश्यकताओं में से कौन सी आवश्यकताओं का सीमित साधनों द्वारा समाधान किया जाए, यही प्रमुख आर्थिक समस्या होती है। सामान्यतः जो आवश्यकताएं अधिक तीव्र होती है उनका सीमित साधनों द्वारा प्राथमिकता से समाधान किया जाता है। इसी प्रकार जिन आवश्यकताओं की प्राथमिकता थोड़ी कम होती है उनको भविष्य में संतुष्ट करने के लिए वर्तमान में स्थगित (टाल दिया) कर दिया जाता है। अप्राथमिक अथवा गौण आवश्यकताओं को लोग असंतुष्ट ही रख देते है।

मुख्य आर्थिक समस्या

आर्थिक समस्या का सम्बंध 'चयन' से होने के कारण इसे चुनाव की समस्या भी कहते है। चुनाव की प्रथम समस्या प्रत्येक व्यक्ति द्वारा समय के आवंटन की होती है। यह आवंटन 'आराम' (Leisure) व 'काम' (Work) के बीच किया जाता है। 'आराम' (Leisure) व 'काम' (Work) के आवंटन के बाद विभिन्न आर्थिक समस्याओं का समाधान करने के लिए सर्वप्रथम संसाधनों का आवंटन किया जाता है। उपलब्ध समस्त साधनों जैसे– (श्रम, भूमि, पूँजी इत्यादि) के आवंटन द्वारा उन सभी मुख्य आर्थिक समस्याओं को ज्ञात किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति मुख्य आर्थिक समस्याओं का पता लगाकर उनके समाधान खोजता है। मुख्य आर्थिक समस्याओं के समाधान खोजने के लिए उत्पादन–संभावना–वक्र, अवसर लागत एवं सीमान्त अवसर लागत की अवधारणाओं को समझना आवश्यक हैं। कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाएँ निम्न है :–

उत्पादन–संभावना–वक्र की अवधारणाः–

डोमिनिक सेलवेटोर के अनुसार 'वह वक्र जो यह बताता है कि एक देश उपलब्ध श्रेष्ठतम तकनीक व अपने सभी संसाधनों का उपयोग करते हुए वस्तुओं की भिन्न भिन्न मात्राओं के वैकल्पिक

संयोगों को जिन्हें वह देश उत्पादित कर सकता है' ऐसा वक्र, उत्पादन–संभावना–वक्र या वस्तु– रूपान्तरण वक्र कहलाता है। इस प्रकार उत्पादन–संभावना–वक्र मूलबिन्दु की ओर नतोदर (Concave To the Origin) होता है। एक उत्पादन–संभावना–वक्र दो वस्तुओं के असंख्य किन्तु वैकल्पिक संयोगों को जोड़ने से बनता है। उत्पादन–संभावना–वक्र पर स्थित एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु पर जाने पर दो वस्तुओं के संयोगों में बदलाव होता है। अर्थात् एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु पर जाने पर दो वस्तुओं एक वस्तु की मात्रा में कमी व दूसरी वस्तु की मात्रा में वृद्धि होती है। संक्षेप में उत्पादन संभावना वक्र यह बताता है कि एक वस्तु का अधिक उत्पादन करने के लिए किसी दूसरी वस्तु का उत्पादन घटाना पड़ता है अर्थात एक वस्तु को दूसरी वस्तु में बदला जा सकता है। चित्र–1.1 में उत्पादन–संभावना–वक्र या वस्तु–रूपान्तरण वक्र दिखायें गयें हैं। जो मूलबिन्दु की ओर नतोदर (Concave To the Origin) हैं।

अवसर लागत की अवधारणाः–

उत्पादन के संसाधनों, जैसे श्रम, पूँजी इत्यादि, को जब किसी एक वस्तु (माना–मक्खन) के उत्पादन में लगाते (नियुक्त करतें) हैं तो उन संसाधनों को अन्य वस्तुओं (माना–बन्दूकों) के उत्पादन में नहीं लगा सकतें हैं। अर्थात् अन्य वस्तुओं (माना–बन्दूकों) के उत्पादन का अवसर गँवाना/त्यागना पड़ता है। अतः गँवाई/त्यागी गईं वस्तुओं (माना–बन्दूकों) को उत्पादित वस्तुओं (माना–मक्खन) के उत्पादन की अवसर लागत माना जाता है। इस प्रकार एक वस्तु के उत्पादन की अवसर लागत उस वस्तु के उत्पादन के स्थान पर अन्य वस्तु के उत्पादन की गँवाई या त्यागी गईं मात्रा होती है।

रेखाचित्र 1.1

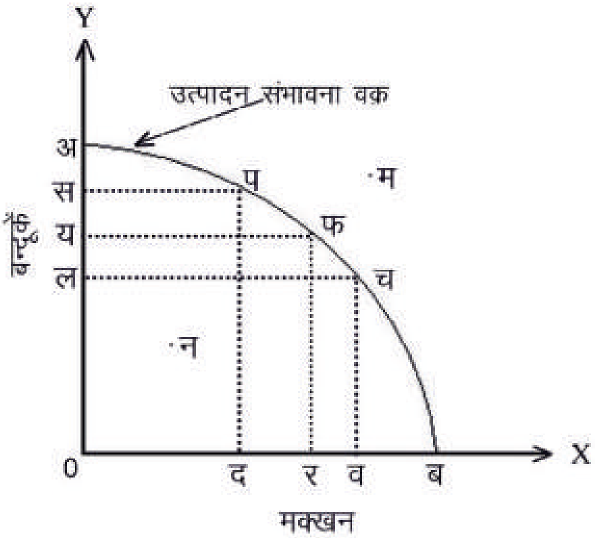

उपर्युक्त चित्रानुसार माना एक अर्थव्यवस्था में उत्पादन के समस्त उपलब्ध संसाधनों, जैसे श्रम व पूँजी के द्वारा o से अ मात्रा बन्दूकों का उत्पादन होता है। इस प्रकार o से ब मात्रा में मक्खन के उत्पादन का अवसर त्यागना पड़ता है। माना उत्पादन प बिन्दु पर o से स मात्रा में बन्दूकों एवं o से द मात्रा में मक्खन का उत्पादन किया जाता है। उत्पादन–संभावना–वक्र के बिन्दु प से फ पर जाने की स्थिति में स – य मात्रा में बन्दूकों के उत्पादन की कमी के बदले में मक्खन का द – र मात्रा में अतिरिक्त उत्पादन किया जाता है। मक्खन की द – र मात्रा में अतिरिक्त उत्पादन की अवसर लागत त्यागी गई बन्दूकों के उत्पादन की स – य मात्रा में कमी होगी।

सीमान्त अवसर लागत की अवधारणा :– उत्पादन के लिए संसाधनों को एक वस्तु के उत्पादन से हटा कर दूसरी वस्तु के उत्पादन की ओर/तरफ मोड़ते हैं। संसाधनों को जब एक वस्तु की एक अतिरिक्त मात्रा का उत्पादन बढ़ाने के लिए दूसरी अन्य वस्तु के उत्पादन में कमी करनी पड़ती है। इस प्रकार एक अतिरिक्त मात्रा का उत्पादन बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु के

मुख्य आर्थिक समस्यायें

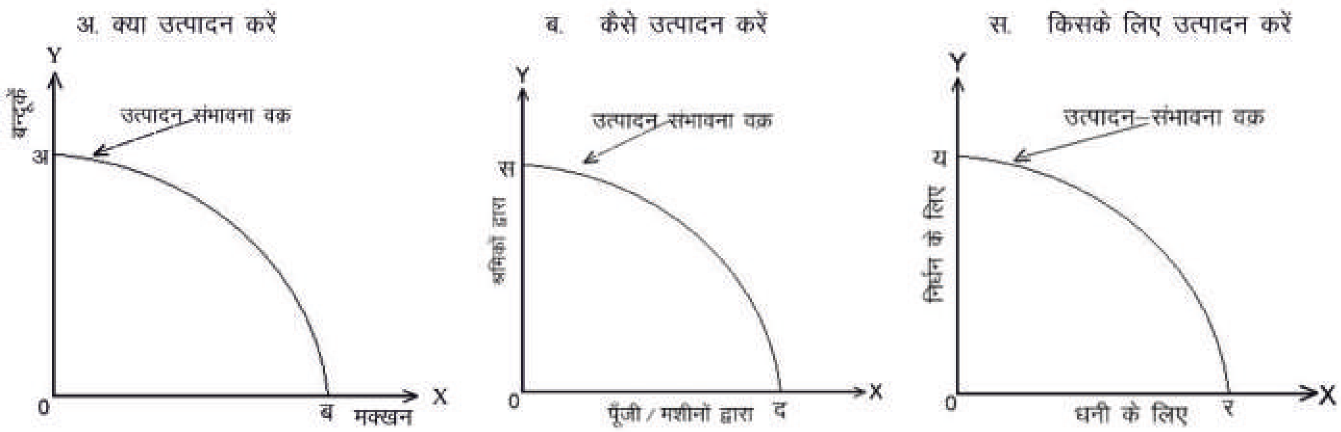

रेखाचित्र चित्र–1.2: उत्पादन–संभावना–वक्रों की सहायता से मुख्य आर्थिक समस्याओं के समाधान

वस्तु के उत्पादन में कमी करनी पड़ती है। इस प्रकार एक अतिरिक्त मात्रा का उत्पादन बढ़ाने के लिए दूसरी वस्तु के उत्पादन में कमी की जाती है। दूसरी वस्तु के उत्पादन में की गई कमी की मात्रा प्रथम वस्तु की सीमान्त अवसर लागत कहलाती है। जैसे कुछ संसाधनों को कपड़ा उत्पादन से हटा कर, उनके द्वारा खेतों में गेंहूँ के उत्पादन की ओर/तरफ मोड़ते हैं। माना संसाधनों को मोड़ने के कारण 200 मीटर कपड़े का उत्पादन घट जाता है और 1 क्विण्टल गेंहूँ के उत्पादन की बढ़ोतरी होती है। इस प्रकार गेंहूँ (एक वस्तु) के उत्पादन में एक इकाई की वृद्धि करने पर कपड़ा (दूसरी वस्तु) के उत्पादन में 200 इकाई की कमी होती है। अतः गेंहूँ (एक वस्तु) के उत्पादन की एक अतिरिक्त इकाई की सीमान्त अवसर लागत कपड़ा (दूसरी वस्तु) के उत्पादन में 200 इकाई की कमी को माना जायेगा।

आर्थिक समस्याओं के समाधान, अर्थव्यवस्था के प्रकार–(पूँजीवादी, समाजवादी व मिश्रित) के अनुसार, भिन्न–भिन्न प्रकार से किये जा सकते हैं जो निम्नलिखित है :–

1. क्या उत्पादन किया जाए की समस्या–

पहली बड़ी समस्या उत्पादन की जाने वाली वस्तु के चुनाव की होती है। समस्त उत्पादन के साधनों (श्रम, भूमि, पूँजी इत्यादि) के द्वारा उत्पादित की जाने वाली वस्तुएँ अलग–अलग प्रकार की होती है।

अतः समस्या 'किन वस्तुओं व सेवाओं का उत्पादन करना है' की होती है। यह समाधान अर्थव्यवस्था के प्रकार पर निर्भर करता है। रेखाचित्र 1.2 के खण्ड (अ) के अनुसार इसे समझ सकते हैं। माना दो वस्तुओं–मक्खन व बन्दूकों का उत्पादन करना है। अतः दोनों के उत्पादन की भिन्न–भिन्न मात्रा को समस्त उत्पादन के साधनों द्वारा जैसे–(0 से अ) मात्रा में बन्दूक या (0 से ब) में मक्खन का उत्पादन संभव है। इसी प्रकार वक्र अ–ब पर कोई अन्य मात्रा, जैसे स या द का चुनाव करते हुए 'क्या उत्पादन करे' की समस्या का समाधान किया जाता है।

2. उत्पादन कैसे किया जाए की समस्या–

एक बार उस वस्तु या सेवा का चुनाव हो जाने के बाद दूसरी समस्या उत्पादन के संगठन व तकनीक की होती है। उपर्युक्त रेखाचित्र के खण्ड (ब) के अनुसार माना दो तकनीकों द्वारा उत्पादन किया जा सकता है। अर्थात श्रम अथवा पूँजी (मशीनों के द्वारा) उत्पादन का संगठन व तकनीक का चुनाव करना होता है। श्रम अथवा पूँजी का चुनाव अर्थव्यवस्था के प्रकार पर निर्भर करता है। दूसरी समस्या उत्पादन के संगठन व तकनीक की होती है। उपर्युक्त रेखाचित्र के खण्ड (ब) के अनुसार माना दो तकनीकों द्वारा उत्पादन किया जा सकता है। अर्थात श्रम अथवा पूँजी (मशीनों के द्वारा) उत्पादन का संगठन व तकनीक का चुनाव करना होता है। श्रम अथवा पूँजी का चुनाव अर्थव्यवस्था के प्रकार पर निर्भर करता है। जैसे– श्रम–साधनों की (0 से स) मात्रा द्वारा या (0 से द) मात्रा में पूँजी की भिन्न–भिन्न मात्रा के द्वारा उत्पादन की मात्रा चुनाव करना होता है। साधनों की मात्रा का चुनाव वक्र स–द पर कोई अन्य मात्रा में से करते हुए उत्पादन का निर्णय करना होता है।

3. किसके लिए उत्पादन किया जाए अर्थात वितरण की समस्या– वस्तु या सेवा तथा उत्पादन के संगठन व तकनीक के बाद अगली चुनाव की समस्या का समाधान किया जाता है। तीसरी प्रमुख समस्या उत्पादन के वितरण की होती है। माना समाज के दो समूह – धनी व निर्धन वर्ग में, उत्पादित वस्तुओं व सेवाओं के वितरण का चुनाव करना हो। उपर्युक्त रेखाचित्र के खण्ड (स) की सहायता से इसे समझ सकते हैं। खण्ड (स) के अनुसार वस्तुएँ या सेवाएँ किस वर्ग को व कितनी मात्रा में वितरित करने का चुनाव करना होता है। उत्पादन का (0 से य) मात्रा द्वारा सम्पूर्ण वितरण निर्धन वर्ग को या (0 से र) मात्रा में उत्पादन का सम्पूर्ण वितरण धनी वर्ग को किया जा सकता है। इसी प्रकार वक्र य–र पर कोई अन्य मात्राओं के संयोगों में से दोनो वर्ग को उत्पादन का सम्पूर्ण वितरण का चुनाव कर सकते हैं। अतः उत्पादन के वितरण का चुनाव करने के समाधान भी अर्थव्यवस्था के प्रकार पर निर्भर करता है।

अन्य समस्याएँ:– 4. उत्पादन में साधनों का उपयोग व वितरण की समस्या 5. उत्पादन के साधनों का पूर्ण उपयोग हो रहा है अथवा कुछ साधन बेकार या अर्द्धबेकार है। 6. उत्पादन क्षमता में वृद्धि की समस्या का हल कैसे करें।

ज्ञात रहे कि अर्थशास्त्र व अर्थव्यवस्था का अभिप्राय अलग–अलग होता है। इस बारे में पॉल क्रुगमेन व रोबिन वेल्स ने अर्थशास्त्र व अर्थव्यवस्था को निम्न प्रकार स्पष्ट किया है– 'एक समाज की उत्पादक–क्रियाओं के लिए समन्वय का एक तन्त्र अर्थव्यवस्था है। अर्थशास्त्र वह सामाजिक–विज्ञान है जो वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन, वितरण व उपभोग का अध्ययन करता है।'

अर्थव्यवस्था

अर्थव्यवस्था का अर्थ किसी देश का वह सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक संगठन, ढाँचा, संरचना या बनावट से होता है। आर्थिक संगठन, ढाँचा, संरचना में लोग वैधानिक तरीकों से आर्थिक–क्रियाएँ कर जीवनयापन करते हैं। अर्थव्यवस्था को सामान्यतः प्राथमिक–क्षेत्र (कृषि व पशुपालन), द्वितीय–क्षेत्र (निर्माण व विनिर्माण) तथा तृतीय–क्षेत्र (सेवाक्षेत्र) के रूप में तीन भागों में वर्गीकृत किया जाता है।

तालिका 1.2

↓समस्या अर्थव्यवस्था→	पूँजीवादी	समाजवादी	मिश्रित
क्या उत्पादन करें	कीमत व लाभ अनुसार	सामाजिक आर्थिक कल्याण	उचित सन्तुलन द्वारा
कैसे उत्पादन करें	न्यूनतम लागत पर	समाज अनुकूल तकनीक	उपयुक्तता के आधार पर
किसको वितरण करें	उत्पादन में योगदाता को	अधिकतम कल्याण के अनुसार	उचित सन्तुलन द्वारा

अर्थव्यवस्था के प्रकार

अर्थव्यवस्था के मुख्य तीन प्रकार होते हैं, 1. पूँजीवादी 2. समाजवादी व 3. मिश्रित। मुख्य आर्थिक समस्याओं के समाधान अर्थव्यवस्था के प्रकार पर निर्भर करता है। प्रमुख समाधन निम्न प्रकार से हैः–

सारणी 1.2 से पता चलता है कि मुख्य आर्थिक समस्याओं के अलग–अलग समाधन होते हैं। आर्थिक समस्याओं के अलग–अलग समाधन अर्थव्यवस्था के प्रकार के अनुसार बदलते रहते हैं। जैसे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उस वस्तु का उत्पादन किया जाता है जिसकी कीमतें सबसे अधिक होती है। चूँकि ऊँची कीमतों के कारण लाभ अधिकतम होता है। किन्तु समाजवादी अर्थव्यवस्था में उस वस्तु का उत्पादन किया जाता है जिससे अधिकतम आर्थिक–कल्याण समाज को मिले।

इस प्रकार अर्थशास्त्र सामाजिक–विज्ञान की एक शाखा है। सामाजिक–विज्ञान की एक शाखा के रूप में अर्थव्यवस्था में होने वाली आर्थिक क्रियाओं का विश्लेषण किया जाता है। अतः अर्थशास्त्र आर्थिक क्रियाओं व समस्याओं के अध्ययन का विज्ञान है। इसी तरह अर्थशास्त्र एक कला के रूप में उन क्रियाओं, समस्याओं के सर्वोत्तम समाधान खोजने में सहायक होता है।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- आर्थिक–क्रियाओं से सम्बन्धित आर्थिक–विचारों, सिद्धान्तों व नियमों का साहित्य समृद्ध होकर अर्थशास्त्र के नाम से लोकप्रिय हुआ।
- ''कृषिपालन, पालयः वाणिज्यम च वार्ताः'' में 'वार्ताः' शब्द का प्रयोग आर्थिक–क्रियाओं के लिए हुआ है।
- अर्थशास्त्र की अलग–अलग परिभाषएं प्रमुखत :–
  1. धन–प्रधान 2. कल्याण–प्रधान 3. सीमितता–प्रधान
  4. विकास–प्रधान व 5. आवश्यकता विहीनता की स्थिति पर आधारित हैं।
- 'अर्थशास्त्र' व्यक्तियों या देशों के द्वारा साधनों की सीमितता के कारण उत्पन्न चुनाव से सम्बन्धित समस्याओं के अध्ययन का विज्ञान व उनके समाधान की कला है।
- सर्वप्रथम सन् 1933 में रेग्नर फ्रिश (Ragner Frisch) ने व्यष्टि–अर्थशास्त्र (Micro-Economics) तथा समष्टि–अर्थशास्त्र (Macro-Economics) का प्रयोग किया।
- व्यष्टि–अर्थशास्त्र में व्यक्तिगत इकाई (एक उपभोक्ता, एक उत्पादक व एक फर्म) का अध्ययन कीमत को ध्यान में रख कर किया जाता है।
- समष्टि–अर्थशास्त्र (Macro-Economics) में अध्ययन व्यापक अथवा समग्र स्तरों के सन्दर्भ में राष्ट्रीय–आय के स्तर, रोजगार के स्तर, देश में बचत का स्तर, देश में विनियोग का स्तर, सामान्य कीमत–का स्तर, आर्थिक–वृद्धि व विकास में उतार व चढ़ाव इत्यादि का अध्ययन किया जाता है।
- निगमन विधि में सामान्य से विशेष तथा परिकल्पना से तथ्यों की ओर व आगमन–विधि के अन्तर्गत विशेष से सामान्य की ओर तथा तथ्यों से परिकल्पना की ओर अध्ययन किया जाता है। निगमन विधि तर्क–आधारित तथा आगमन–विधि आंकड़ों/समंकों व सांख्यिकी की विधि पर आधारित होती है।
- आर्थिक अध्ययन दो प्रकार की प्रकृति के होते हैं–
  1. अर्थशास्त्र विज्ञान के रूप में तथा 2. अर्थशास्त्र कला के रूप में।
- प्राकृतिक–विज्ञान के विषयों को प्रयोगशाला में देखकर उन नियमों व सिद्धान्तों की वास्तविकता परख सकते हैं। अर्थशास्त्र एक प्रकार का सामाजिक–विज्ञान होने के कारण इसके नियमों व सिद्धान्तों को किसी प्रयोगशाला में नहीं

देख सकते हैं। अर्थशास्त्र व सामाजिक–विज्ञान के लिए तो समाज ही प्रयोगशाला होती है।

- आर्थिक–विश्लेषण करते समय कई प्रकार की बातों, दशाओं या शर्तों की मान्यतायें लेते हैं। विभिन्न आर्थिक–नियमों व सिद्धान्तों के खरा उतरने या पूर्णतः सत्य सिद्ध होने के लिए कुछ विशेष बातों, दशाओं या शर्तों की मान्यताओं का पूरा किया जाना आवश्यक होता है।
- प्रथम समस्या समय के 'आराम' (Leisure) व 'काम' (Work) के बीच आवंटन की होती है। प्रत्येक व्यक्ति समय के आवंटन के बाद उपलब्ध समस्त साधनों जैसे– (श्रम, भूमि, पूँजी इत्यादि) के आवंटन द्वारा मुख्य आर्थिक समस्याओं का पता लगाकर उनके समाधान खोजता है।
- उत्पादन–संभावना–वक्र मूलबिन्दु की ओर नतोदर एक वक्र होता है जो दो वस्तुओं के असंख्य किन्तु वैकल्पिक संयोगों को जोड़ने से बनता है। उत्पादन–संभावना–वक्र पर स्थित एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु पर जाने पर दो वस्तुओं के संयोगों में बदलाव होता है।
- एक वस्तु के उत्पादन की अवसर लागत उस वस्तु के उत्पादन के स्थान पर अन्य वस्तु के उत्पादन की गँवाई या त्यागी गई मात्रा होती है।
- एक वस्तु की एक अतिरिक्त मात्रा का उत्पादन बढ़ाने के लिए दूसरी अन्य वस्तु के उत्पादन में कमी प्रथम वस्तु की सीमान्त अवसर लागत कहलाती हैं।
- आर्थिक समस्याओं के समाधान, अर्थव्यवस्था के प्रकार–(पूँजीवादी, समाजवादी व मिश्रित) के अनुसार, भिन्न–भिन्न प्रकार से किये जा सकते हैं।
- पॉल क्रुगमेन व रोबिन वेल्स ने अर्थशास्त्र व अर्थव्यवस्था को निम्न प्रकार स्पष्ट किया है– 'एक समाज की उत्पादक–क्रियाओं के लिए समन्वय का एक तन्त्र अर्थव्यवस्था है। अर्थशास्त्र वह सामाजिक–विज्ञान है जो वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन, वितरण व उपभोग का अध्ययन करता है।'

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. अर्थशास्त्र की धन प्रधान परिभाषा किसके द्वारा दी गई :–
   (अ) एडम स्मिथ (ब) अल्फ्रेड मार्शल
   (स) पाल ए सेम्युलसन (द) कुत्सोयानिस
2. 'वार्ता:' शब्द का प्रयोग किया गया है ?
   (अ) कृषि के लिए (ब) पशुपालन के लिए
   (स) वाणिज्य के लिए (द) उपर्युक्त सभी के लिए
3. व्यष्टि–अर्थशास्त्र का सम्बन्ध है–
   (अ) उत्पादन–साधनों की कीमतों से
   (ब) सेवाओं की कीमतों से
   (स) वस्तुओं की कीमतों से
   (द) उपर्युक्त सभी से
4. समष्टि–अर्थशास्त्र का सम्बन्ध है–
   (अ) राष्ट्रीय–आय, आर्थिक–वृद्धि व विकास से
   (ब) सामान्य कीमत व रोजगार के स्तर से
   (स) कुल बचत व कुल विनियोग के स्तर से
   (द) उपर्युक्त सभी से
5. मुख्य आर्थिक समस्या नहीं है–
   (अ) क्या उत्पादन करें
   (ब) कैसे उत्पादन करें
   (स) किसको उत्पादन का वितरण करें
   (द) निर्धन कैसे बने

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. अर्थशास्त्र का सम्बन्ध किससे है ?
2. व्यष्टि–अर्थशास्त्र क्या है ?
3. समष्टि–अर्थशास्त्र किसे कहते है ?
4. अर्थ–व्यवस्था को कौन–कौन से क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जाता है ?
5. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में निर्णय किस आधार पर लिया जाता है ?
6. समाजवादी अर्थव्यवस्था में निर्णय किस आधार पर लिया जाता है ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. व्यष्टि–अर्थशास्त्र का अध्ययन के प्रमुख क्षेत्र बताइए।
2. समष्टि–अर्थशास्त्र के अध्ययन के मुख्य क्षेत्र कौन–कौन से है?
3. व्यष्टि–अर्थशास्त्र के प्रकार का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।
4. उत्पादन–संभावना वक्र किसे कहते हैं ?
5. अवसर–लागत किसे कहते हैं ?
6. अर्थशास्त्र की निगमन और आगमन विधि का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न–

1. सीमितता व चयन के सम्बन्ध को विस्तार से समझाइये।
2. किसी अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं का उल्लेख करते हुए इनकी उत्पत्ति के कारणों का विस्तृत वर्णन कीजिए।
3. मुख्य आर्थिक समस्याओं को उत्पादन–संभावना वक्र व अवसर–लागत की अवधारणा की सहायता से विस्तारपूर्वक समझाइये।
4. आर्थिक–विश्लेषण की प्रमुख मान्यताओं का विस्तृत वर्णन कीजिए।
5. व्यष्टि एवम् समष्टि–अर्थशास्त्र के अन्तर का विस्तृत वर्णन कीजिए।
6. विस्तारपूर्वक समझाइये कि अर्थशास्त्र विज्ञान व कला दोनो है।

उत्तर तालिका

1	2	3	4	5
अ	द	द	द	द